



Original Article

21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में चित्रित स्वास्थ्य समस्याएँ

प्रो. (डॉ.) नितीन हिंदुराव कुंभार

प्रोफेसर, हिंदी विभाग

डॉ.पतंगराव कदम महाविद्यालय, रामानंदनगर(बुर्ली) तह- पलूस, जि.सांगली(महाराष्ट्र)

Manuscript ID:

IJAAR-C130305

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 18 - 21

Submitted: 16 Jan.2026

Revised: 21 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रो. (डॉ.) नितीन हिंदुराव कुंभार

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22774601

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22774601>



Creative Commons



सार:

मानव स्वभाव से ही समाजप्रिय और एक गतिशील प्राणी है। अतः मानव समाज में हमेशा परिवर्तन होते रहते हैं। समाज और साहित्य का अटूट संबंध होने के कारण साहित्य में भी निरंतर परिवर्तन होना स्वाभाविक है। साहित्य समाज की समस्त संवेदनाओं की अभिव्यक्ति करता है। मनुष्य अपनी आदिम अवस्था से ही संघर्षरत रहने के कारण अनेकानेक समस्याओं से जकड़ा रहा है। वह हमेशा समस्याओं से जूझता रहा है। इस प्रकार प्रत्येक युग में वह किसी – न – किसी सामाजिक समस्याओं से आहत रहा है।

21वीं सदी भी अनेकानेक समस्याओं की गाथा से त्रस्त है। परंतु इस सदी की विड़म्बना यह है कि औद्योगिक क्रांति, नगरीकरण, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नयी – नयी प्रविधियों के आविष्कार, नयी – नयी मशीनों के आविष्कार, यातायात और संचार की सुविधाएँ और शिक्षा की अत्याधिक प्रगति के बावजूद भी कुछ समस्याएँ स्थायी रूप में तो कुछ समयानुरूप नयी समस्याओं से वर्तमान समाज जूझ रहा है। अतः स्वतंत्रता के सात दशक के पश्चात भी समाज में भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, अंधविश्वास, दहेज, जातिगत विषमता, पश्चिमीकरण तथा स्वास्थ्य आदि ऐसी कई समस्याएँ पनप रही हैं। हिंदी कहानीकारों ने ऐसी समस्याओं पर तीखा प्रहार किया है।

मुख्य शब्द: समाज, साहित्य, स्वास्थ्य, चिकित्सा, सेवाभावी, विसंगतियाँ – समस्याएँ।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रो. (डॉ.) नितीन हिंदुराव कुंभार. (2026). 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में चित्रित स्वास्थ्य समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 18 - 21. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22774601>

प्रस्तावना:

आज के इस भागदौड़ के ज़माने में चिकित्सा क्षेत्र और मानवी जीवन का बहुत ही नजदीकी संबंध बन गया है। मनुष्य के स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए चिकित्सा क्षेत्र अहम् भूमिका निभाता है। चिकित्सा की परंपरा वैसे तो हमारे देश में

प्राचीन युग से प्रचलित है। विशेष रूप से किसी बीमारी से पीड़ित होने पर उससे मुक्ति पाने के लिए जो उपचार किए जाते हैं वह चिकित्सा कहलाती है। नालंदा विशाल शब्दसागर में “रोग दूर करने और शरीर को निरोगी करने की विधि। प्रक्रिया। तथा चिकित्सक का व्यवसाय या काम”¹ को चिकित्सा कहा



गया है। अतः स्थूल रूप से सभी प्रकार के उपचार चिकित्सा के अंतर्गत आते हैं। स्वास्थ्य रक्षण, रोग निवारण, रोग उन्मूलन आदि इसके महत् उद्देश्य हैं। इसलिए प्राचीन काल से चिकित्सकों तथा चिकित्सालयों को बहुत आदर और सम्मान से देखा जाता है। वैद्य तथा डॉक्टर को मसीहा माना जाता था। परंतु आज की भौतिक और वैज्ञानिक प्रगति ने एक ओर चिकित्सा के क्षेत्र में कल्पनातीत वृद्धि हुई है तो दूसरी ओर मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण यह क्षेत्र पथभ्रष्ट हो गया है। आज यह क्षेत्र सामान्य जन को ठगने का केंद्र बन गया है। प्रतिष्ठा और संपत्ति के लिए यहाँ मानवता और कर्तव्यनिष्ठता नहीं के बराबर रह गयी है। परिणाम स्वरूप यहाँ शोषण, तस्करी, अन्याय आदि ने अपनी जड़े जमा ली हैं। अतः चिकित्सा जैसा सेवाभावी क्षेत्र भी आज सामाजिक समस्याओं की गर्त में फँस गया है। इसलिए चिकित्सा क्षेत्र में निर्माण होनेवाली विसंगतियों का पर्दाफाश कहानीकारों ने किया है।

डॉक्टर जैसे पेशे का महत्त्वपूर्ण कर्तव्य है - समाजसेवा। परंतु आज नैतिक अवमूल्यन के कारण इस पेशा से संबंधित लोग समाज की मजबूरी का फायदा उठाकर उनका दोहन करते हुए दिखाई देते हैं। अलग – अलग बीमारियों के नाम बताकर स्वार्थसिद्धि के लिए शोषण किया जाता है। अतः वे मानव नहीं दानव बन जाते हैं। आजकल तो चिकित्सा क्षेत्र में भी तस्करी हो रही है। ये लोग अपने मूल कर्तव्य को भूलकर सेवा के नाम पर मेवा जुटा रहे हैं। परिणाम स्वरूप समाज में इस वर्ग की प्रतिमा मलिन होती जा रही है। मनु शर्मा की 'मुंशीजी स्वर्ग – नरक संघर्ष आयोग के सदस्य' कहानी में मुंशीजी डॉक्टर का नाम लेते ही कहते हैं, “तुम्हारा दिमाग भी मास्टर सठिया गया है। जैसे आज सारे खुराफत की जड़ राजनीति होती है, सारे मुकदमे की जड़ वकील होता है, वैसे ही सारे रोग की जड़ डॉक्टर है।... इस डॉक्टर को भगाओ, तो सारा रोग आपसे

आप भाग जाएगा।... हमारा मतलब साफ है। ये डॉक्टर आदि शैतानी शक्ति के ही पक्षधर हैं। इसी से इन्हें स्वर्ग में स्थान नहीं मिलता।”^{1,2} अतः डॉक्टरों की कर्तव्यहीनता पर किया गया यह व्यंग्य बिल्कुल सही है।

आज डॉक्टरों के द्वारा बीमारियों के भेद – प्रभेद बताये जाते हैं। नयी – नयी बीमारियों के आगमन के संकेत दिए जाते हैं। शायद जितने इन्सान उतनी बीमारियाँ दिखाई देती हैं। इन बीमारियों की जाँच अलग – अलग तंत्रों से करके मानो एक शृंखला के रूप में लोगों का शोषण ही किया जाता है। चिकित्सा क्षेत्र में विकसित तंत्र प्रणाली लोगों के लिए चमत्कार तो है ही परंतु वही प्रणाली उनके शोषण का माध्यम भी बन गयी है। दिलीप पटेल ने ‘बीमारी से बंदा परेशान’ में इस तंत्र प्रणाली पर बहुत ही सटीक व्यंग्य किया है कि, “आजकल तो बीमारियाँ इतनी ज्यादा बढ़ गयी हैं कि नाम सार्स एड्स सुनकर चक्कर आते हैं। उसके भेद – प्रभेद और नाना प्रकार के कॉम्प्लीकेशन्स और इलाज भी बढ़े हैं। एक्सरे, सोनोग्राफी, एंडोस्कोपी और तरह – तरह के टेस्ट।”^{1,3} इन्हीं तंत्र प्रणाली के आधार पर आज अस्पताल बीमारियों को दुरुस्त करने के लिए नहीं बल्कि जनों को लूटने के केंद्र बन गए हैं। अलग – अलग बीमारियों के लिए अलग – अलग अस्पतालों ने अपनी पहचान बनाई है। पहले एक ही अस्पताल में सब बीमारियों के इलाज किए जाते थे परंतु आज प्रत्येक बीमारी की चिकित्सा के लिए बड़े – बड़े शहरों में अस्पताल मशहूर हैं। जिस प्रकार पाप – पुण्य के प्रक्षालन के लिए तीर्थस्थान प्रसिद्ध होते हैं उसी प्रकार बीमारी से मुक्ति पाने के लिए अस्पताल प्रसिद्ध है। इस संबंध में दिलीप पटेल की ‘बीमारी से बंदा परेशान’ कहानी की व्यंग्यात्मक टिप्पणी बिल्कुल सही है कि, “बीमारियों के इलाज कुछ बड़े अस्पताल तो तीर्थस्थानों की तरह प्रसिद्ध हो गए हैं। कैंसर हो तो टाटा मेमोरियल, यूरिन स्टोन हो तो नडियाद, टी.



बी. हो तो मिरज, हड्डी से संबंधित बीमारी हो तो संचेती पूना, आँखों से संबंधित हो तो अहमदनगर, मेंटल हो तो थाना, मरोली आगरा का अस्पताल।^{1'4} अतः यहाँ बीमारी के नाम पर प्रसिद्ध अस्पतालों के द्वारा होनेवाली लूट की पोल खोल दी है।

इस प्रकार आज जितना बड़ा अस्पताल या विशेष जानकार (स्पेशलिस्ट) डॉक्टर होता है उतनी ही बड़ी बीमारी बन जाती है। वहाँ के डॉक्टर छोटे – छोटे टेस्ट करवाने के बाद ही इलाज के लिए तैयार होते हैं। इस संबंध में डॉक्टर एक – दूसरे के साथ मिलकर लोगों का शोषण करते रहते हैं। शंकर पुणतांबेकर की 'इलाज पाण्डवी इलाज कौरवी' व्यंग्य कथा में सभी प्रकार की जाँच के बाद अस्पताल में भर्ती करवाकर बार – बार इंजेक्शन करने पर अब लगता है मेरा इलाज हो रहा है ऐसा माननेवाली पत्नी से पति कहता है, “हाँ, मुझे भी ऐसा ही लग रहा है। जब पचास रुपए रोज पलंग के, सौ रुपए रोज दवा के और पचास रुपए रोज भागदौड़ और आलतूफालतू के खर्च हो रहे हैं।^{1'5} अतः यहाँ डॉक्टरों के द्वारा होनेवाले शोषण पर गहरी चोट की गयी है।

आज चिकित्सा क्षेत्र में होनेवाले शोषण के कारण वहाँ मानवता के दर्शन नहीं होते। डॉक्टर मरीजों की मजबूरी का फायदा उठाते हुए शोषण करते रहते हैं। जिस प्रकार कोई वकील यह नहीं चाहता कि किसी को जल्दी न्याय मिले उसी प्रकार डॉक्टर नहीं चाहता कि मरीज को जल्दी राहत मिले। क्योंकि उनका मानना है कि लोगों के शोषण पर ही उनकी तंदुरुस्ती निर्भर है। सुधीर ओखदे की 'प्रतिष्ठित हत्यारे' कहानी में लोगों को बड़ी बीमारी बताकर अस्पताल में भर्ती करवाकर मरीजों का शोषण करनेवाले अपने पति डॉ. सुनील के इन दुष्कृत्यों पर प्रीति जब आपत्ति उठाती है तो सुनील कहता है, “कौन चाहता है कि बच्चे अच्छे हो। पड़े रहें। तोड़ते रहे

पलंग। दिन का किराया तो चढ़ता रहेगा। दूसरों के बच्चों का खून नहीं चूसूँगा तो हमारा अपना बच्चा तंदुरुस्त कैसे निकलेगा।^{1'6} अतः डॉक्टर आज सेवाव्रती नहीं पेशावर बनते चले जा रहे हैं। अपनी तरक्की और नाम की लालसा के लिए वे अमानुषिक कृत्य कर रहे हैं। बड़ी बीमारी बताकर जाँच और इलाज के नाम पर मरीजों का शोषण कर अपना नाम और अस्पताल बड़ा करने के धुन में है। डॉ. सुनील अपनी पत्नी डॉ. प्रीति से कहता है, “बच्चे को सीजनल बुखार है। दो गोलियों में बच्चा खेलने लगेगा।... बच्चा खेलना नहीं चाहता। आराम करना चाहता है। प्रीति अब भूलो अपनी घरवाली क्लीनिक को। यह तुम्हारा अस्पताल है। इसे इतना बड़ा करना है कि शहरभर के सारे बच्चे भी इसमें भर्ती हो जाएँ तो भी जगह कम न पड़े।^{1'7} डॉक्टरों की दारिदी पर किया गया यह व्यंग्य बिल्कुल यथार्थ है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आज स्वास्थ्य के नाम पर चलनेवाले चिकित्सा क्षेत्र पूरी तरह दुष्कर्मों से लिप्त है। जनकल्याण का व्रत लिए हुए डॉक्टर का पेशा जनता को ठगने का क्षेत्र बन गया है। स्वार्थ तथा नाम की लालसा के लिए डॉक्टर जाँच और इलाज के बहाने मरीजों का दोहन कर रहे हैं। कभी – कभी यह शोषण इस हद तक पहुँच जाता है कि वे मानवता को भी भूल जाते हैं। आज मानवता का हनन चिकित्सा जैसे सेवाभावी क्षेत्र में विसंगतियाँ निर्माण कर रहा है। स्वार्थता के कारण इस क्षेत्र में मानो मानव नहीं दानव कार्य कर रहे हैं। लोगों का शोषण ही इनका एकमात्र लक्ष्य बन गया है। अतः चिकित्सा क्षेत्र अपने मूल सिद्धांतों से हट गया है। अतः चिकित्सा क्षेत्र में व्याप्त अमानवीय प्रवृत्ति के कारण वर्तमान समाज में स्वास्थ्य की समस्या दिन – ब – दिन बढ़ती



ही जा रही है। हिंदी कहानियों में स्वास्थ्य की समस्या पर निर्मम प्रहार करके जनचेतना जगाने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. संपा. श्री. नवलजी, 'नालंदा विशाल शब्दसागर', नयी दिल्ली : आदीश बुक डेपो, सं. सन् 2003 ई. पृ. 375.
2. मनु शर्मा, 'मुंशी नवनीतलाल, दिल्ली : सत्साहित्य प्रकाशन, प्र. सं. सन् 2010 ई. पृ. 62 - 63.
3. डॉ. दिलीप पटेल, 'साजन चले ससुराल', कानपुर : चंद्रलोक प्रकाशन, प्र. सं. सन् 2014 ई. पृ. 52.
4. वही, पृ. 52.
5. डॉ. शंकर पुणतांबेकर, 'आखरमार', कानपुर : विकास प्रकाशन, प्र. सं. सन् 2004 ई. पृ. 28.
6. सुधीर ओखदे, 'सड़क अभी दूर है', गोरखपुर : शैवाल प्रकाशन, प्र. सं. सन् 2008 ई. पृ. 64.
7. वही, पृ. 65.